''मीठे बच्चे – प्राणेश्वर बाप आया है तुम बच्चों को प्राणदान देने, प्राणदान मिलना अर्थात् तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना''

प्रश्नः- ड्रामा के हर राज़ को जानने के कारण कौन-सी सीन तुम्हारे लिए नई नहीं है?

उत्तरः- इस समय जो सारी दुनिया में हंगामें हैं, विनाश काले विपरीत बुद्धि बन अपने ही कुल का खून करने लिए अनेक साधन बनाते जाते हैं। यह कोई नई बात नहीं क्योंकि तुम जानते हो यह दुनिया तो बदलनी ही है। महाभारत लड़ाई के बाद ही हमारी नई दुनिया आयेगी।

गीतः- यह कौन आज आया...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) यह पुरानी दुनिया विनाश हुई पड़ी है इसलिए इससे अपने आपको अलग समझना है। झाड़ की वृद्धि के साथ-साथ जो विघ्नों रूपी तूफान आते हैं, उनसे डरना नहीं है, पार होना है।

2) आत्मा को सतोप्रधान बनाने के लिए अपने को ज्ञान-योग का इन्जेक्शन देना है। अपना बुद्धियोग स्वीट होम में लगाना है।

वरदानः- ''पहले आप'' के पाठ द्वारा ताजधारी बनने वाले चतुरसुजान भव

जैसे बापदादा अपने को ओबीडियन्ट सर्वेन्ट कहते हैं, सर्वेन्ट कहने से ताजधारी स्वत: बन जाते हैं, ऐसे आप बच्चे भी स्वयं नम्रचित बन दूसरे को श्रेष्ठ सीट दे दो, उनको सीट पर बिठायेंगे तो वह उतरकर आपको स्वत: ही बिठा देगा। अगर आप बैठने की कोशिश करेंगे तो वह बैठने नहीं देगा इसलिए बिठाना ही बैठना है। तो ''पहले आप'' का पाठ पक्का करो फिर संस्कार भी सहज ही मिल जायेंगे, ताजधारी भी बन जायेंगे, यही चतुरसुजान बनने का तरीका है, इसमें मेहनत भी नहीं प्राप्ति भी ज्यादा है।

स्लोगनः- अव्यक्त स्थिति का अनुभव करने के लिए अन्तर्मुखी, एकान्तवासी बनो।

अव्यक्त इशारे

एकता और विश्वास की विशेषता द्वारा सफलता सम्पन्न बनो

अभी तक अलग-अलग फूल अपनी-अपनी रंगत दिखा रहे हैं लेकिन जब गुलदस्ते के रूप में अपनी खुशबू फैलायेंगे, शक्ति दल प्रत्यक्ष होगा तब यह संगठन की शक्ति परमात्म प्रत्यक्षता के निमित्त बनेंगी। अभी एक-एक अलग होने के कारण मेहनत ज्यादा करनी पड़ती है लेकिन जब संगठन एकमत होगा तो मेहनत कम सफलता जास्ती होगी।

''मीठे बच्चे – तुम अभी अमरलोक स्थापन करने के निमित्त हो, जहाँ कोई भी दु:ख वा पाप नहीं होगा, वह है ही वाइसलेस वर्ल्ड''

प्रश्नः- गॉडली फैमिली का वन्डरफुल प्लैन कौन सा है?

उत्तरः- गॉडली फैमिली का प्लैन है – ''फैमिली प्लैनिंग करना''। एक सत धर्म स्थापन कर अनेक धर्मों का विनाश करना। मनुष्य बर्थ कन्ट्रोल करने के प्लैन्स बनाते, बाप कहते उनके प्लैन्स चल न सकें। मैं ही नई दुनिया की स्थापना करता हूँ तो बाकी सब आत्मायें ऊपर घर में चली जाती हैं। बहुत थोड़ी आत्मायें ही रहती हैं।

धारणा के लिये मुख्य सार:-

1) विष्णुपुरी में चलने के लिए स्वयं को लायक बनाना है। सम्पूर्ण पावन बनना है, अशुद्ध खान-पान त्याग कर देना है। विनाश के पहले अपना सब कुछ सफल करना है।

2) जल्दी-जल्दी पढ़कर होशियार होना है। कोई भी विकर्म न हो इसका ध्यान रखना है।

वरदानः- फरियाद को याद में परिवर्तन करने वाले स्वतः और निरन्तर योगी भव

संगमयुग की विशेषता है – अभी-अभी पुरूषार्थ, अभी-अभी प्रत्यक्षफल। अभी स्मृति स्वरूप अभी प्राप्ति का अनुभव। भविष्य की गारन्टी तो है ही लेकिन भविष्य से श्रेष्ठ भाग्य अभी का है। इस भाग्य के नशे में रहो तो स्वतः याद रहेगी। जहाँ याद है वहाँ फरियाद नहीं। क्या करें, कैसे करें, यह होता नहीं है, थोड़ी मदद दे दो – यह है फ़रियाद। तो फरियाद को छोड़कर स्वतः योगी निरन्तर योगी बनो।

स्लोगनः- जो स्वयं को मेहमान समझकर चलते हैं वही महान स्थिति का अनुभव करते हैं।

अव्यक्त इशारे

एकता और विश्वास की विशेषता द्वारा सफलता सम्पन्न बनो

संगठन का बल, स्नेह का बल, एक दो को सहयोग देने का बल और सहनशीलता का बल जमा करो तो माया कभी वार नहीं कर सकेगी, फिर जयजयकार का नारा लगेगा। जब इतने सभी अनेक होते भी एक दिखाई देंगे, एक की ही लगन में मगन, एकरस स्थिति में स्थित होंगे तब प्रत्यक्षता की निशानी देखने में आयेगी। आप सबकी प्रतिज्ञा ही प्रत्यक्षता को समीप लायेगी।

''मीठे बच्चे – तुम इस यूनिवर्सिटी में आये हो पुरानी दुनिया से मरकर नई दुनिया में जाने, अभी तुम्हारी प्रीत एक भगवान से हुई है''

प्रश्नः- किस विधि से बाप की याद तुम्हें साहूकार बना देती है?

उत्तरः- बाप है बिन्दु। तुम बिन्दु बन बिन्दु को याद करो तो साहूकार बन जायेंगे। जैसे एक के साथ बिन्दु लगाओ तो 10 फिर बिन्दु लगाओ तो 100, फिर 1000 हो जाता। ऐसे बाप की याद से बिन्दु लगती जाती है। तुम धनवान बनते जाते हो। याद में ही सच्ची कमाई है।

गीतः- महफिल में जल उठी शमा...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) हम गॉडली स्टूडेन्ट्स हैं, यह सदैव स्मृति में रखना है। कोई भी छी-छी आदत नहीं डालनी है। उन्हें मिटाना है। विकार का ज़रा भी ख्याल नहीं आना चाहिए।

2) जीते जी शरीर का भान भूलकर बाप को याद करना है। भिन्न-भिन्न प्वॉइन्ट्स विचार सागर मंथन कर पतितों को पावन बनाने का धन्धा करना है।

वरदानः- सन्तुष्टता के त्रिमूर्ति सर्टीफिकेट द्वारा सदा सफलता प्राप्त करने वाले ऊंच पद के अधिकारी भव

सदा सफल होने के लिए बाप और परिवार से ठीक कनेक्शन चाहिए। हर एक को तीन सर्टीफिकेट लेने हैं – बाप, आप और परिवार। परिवार को सन्तुष्ट करने के लिए छोटी सी बात याद रखो – कि रिगार्ड देने का रिकार्ड निरन्तर चलता रहे, इसमें निष्काम बनो। बाप को सन्तुष्ट करने के लिए सच्चे बनो। और स्वयं से सन्तुष्ट रहने के लिए सदा श्रीमत की लकीर के अन्दर रहो। ये तीन सर्टीफिकेट ऊंच पद का अधिकारी बना देंगे।

स्लोगनः- जो चित्र को न देख चैतन्य और चरित्र को देखते हैं वही श्रेष्ठ चरित्रवान हैं।

अव्यक्त इशारे

एकता और विश्वास की विशेषता द्वारा सफलता सम्पन्न बनो

जैसे सर्व आत्माओं को ज्ञान की रोशनी देने के लिये सदैव शुभ भावना व कल्याण की भावना रखते हो। ऐसे अपने इस दैवी संगठन को भी एक-रस स्थिति में स्थित कर संगठन की शक्ति को बढ़ाने का प्रयत्न करो तब आपके इस दैवी संगठन की मूर्त में एकता और एकरस स्थिति का प्रत्यक्ष रूप में साक्षात्कार होगा।

''मीठे बच्चे – अभी भारत खास और आम सारी दुनिया पर बृहस्पति की दशा बैठनी है, बाबा तुम बच्चों द्वारा भारत को सुखधाम बना रहे हैं''

प्रश्नः- 16 कला सम्पूर्ण बनने के लिए तुम बच्चे कौन सा पुरुषार्थ करते हो?

उत्तरः- योगबल जमा करने का। योगबल से तुम 16 कला सम्पूर्ण बन रहे हो। इसके लिए बाप कहते हैं दे दान तो छूटे ग्रहण। काम विकार जो गिराने वाला है इसका दान दो तो तुम 16 कला सम्पूर्ण बन जायेंगे। 2- देह-अभिमान को छोड़ देही-अभिमानी बनो, शरीर का भान छोड़ दो।

गीतः- तुम मात पिता...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) जो भी अन्दर में कांटे हैं उनकी जांच कर निकालना है। रामपुरी में चलने का पुरूषार्थ करना है।
2) अविनाशी ज्ञान रत्नों का सौदा कर किसी का भी कल्याण करने में समय देना है। हसीन बनना और बनाना है।

वरदानः- तमोगुणी वायुमण्डल में अपनी स्थिति एकरस, अचल-अडोल रखने वाले मास्टर सर्वशक्तिमान् भव

दिन-प्रतिदिन परिस्थितियाँ अति तमोप्रधान बननी हैं, वायुमण्डल और भी बिगड़ने वाला है। ऐसे वायुमण्डल में कमल पुष्प समान न्यारे रहना, अपनी स्थिति सतोप्रधान बनाना – इसके लिए इतनी हिम्मत वा शक्ति की आवश्यकता है। जब यह वरदान स्मृति में रहता कि मैं मास्टर सर्वशक्तिमान् हूँ तो चाहे प्रकृति द्वारा, चाहे लौकिक सम्बन्ध द्वारा, चाहे दैवी परिवार द्वारा कोई भी परीक्षा आ जाए – उसमें सदा एकरस, अचल-अडोल रहेंगे।

स्लोगनः- वरदाता बाप को अपना सच्चा साथी बना लो तो वरदानों से झोली भरी रहेगी।

अव्यक्त इशारे

एकता और विश्वास की विशेषता द्वारा सफलता सम्पन्न बनो

इस परमात्म-ज्ञान से ही विश्व में एक धर्म, एक राज्य, एक मत की स्थापना होती है। आपके इस ब्राह्मण संगठन के एकमत की विशेषता – देवता रूप में प्रैक्टिकल चलती है। यह विशेषता ही कमाल करेगी, इससे ही नाम बाला होगा, प्रत्यक्षता होगी। तो इस विशेषता में नम्बरवन बनो। इसके लिए जो अपना मूल संस्कार है, उसको मिटाकर बापदादा के संस्कारों को कॉपी कर समान और सम्पूर्ण बनो तब हर एक से बाप दिखाई देगा और प्रत्यक्षता होगी।

''मीठे बच्चे – तुम्हें कमाई का बहुत शौक होना चाहिए, इस पढ़ाई में ही कमाई है''

प्रश्नः- ज्ञान के बिगर कौन सी खुशी की बात भी विघ्न रूप बन जाती है?

उत्तरः- साक्षात्कार होना, यह है तो खुशी की बात लेकिन अगर यथार्थ रूप से ज्ञान नहीं है तो और ही मूँझ जाते हैं। समझो किसी को बाप का साक्षात्कार हुआ, बिन्दू देखा तो क्या समझेंगे और ही मूँझेंगे, इसलिए ज्ञान के बिगर साक्षात्कार से कोई भी फायदा नहीं, इसमें और ही माया के विघ्न पड़ने लगते हैं। कइयों को साक्षात्कार का उल्टा नशा भी चढ़ जाता है।

गीतः- तकदीर जगाकर आई हूँ...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) अपनी कमियों को छिपाना भी स्वयं को ठगना है – इसलिए कभी भी अपने से ठगी नहीं करनी है।

2) अपनी ऊंच तकदीर बनाने के लिए कोई भी काम कायदे के विरुद्ध नहीं करना है। पढ़ाई का शौक रखना है। आप समान बनाने की सेवा करनी है।

वरदानः- अमृतवेले की मदद वा श्रीमत की पालना द्वारा स्मृति को समर्थवान बनाने वाले स्मृति स्वरूप भव

अपनी स्मृति को समर्थवान बनाना है वा स्वत: स्मृति स्वरूप बनना है तो अमृतवेले के समय की वैल्यु को जानो। जैसी श्रीमत है उसी प्रमाण समय को पहचान कर समय प्रमाण चलो तो सहज सर्व प्राप्ति कर सकेंगे और मेहनत से छूट जायेंगे। अमृतवेले के महत्व को समझकर चलने से हर कर्म महत्व प्रमाण होंगे। उस समय विशेष साइलेन्स रहती है इसलिए सहज स्मृति को समर्थवान बना सकते हो।

स्लोगनः- याद और निःस्वार्थ सेवा द्वारा मायाजीत बनने वाले ही सदा विजयी हैं।

अव्यक्त इशारे

एकता और विश्वास की विशेषता द्वारा सफलता सम्पन्न बनो

संगठित रूप में आप ब्राह्मण बच्चों की आपस के सम्पर्क की भाषा अव्यक्त भाव की होनी चाहिए। जैसे फरिश्ते अथवा आत्मायें आत्माओं से बोल रही हैं। इसके लिए किसी की सुनी हुई गलती को संकल्प में भी न स्वीकार करना और न कराना। ऐसी जब स्थिति हो तब ही बाप की जो शुभ कामना है – एकमत संगठन की, वह प्रैक्टिकल में होगी और आपके द्वारा बाप प्रत्यक्ष होगा।

''मीठे बच्चे – तुम बाप के पास आये हो अपनी सोई हुई तकदीर जगाने, तकदीर जगना माना विश्व का मालिक बननौं''

प्रश्नः- कौन सी खुराक तुम बच्चों को बाप समान बुद्धिवान बना देती है?

उत्तरः- यह पढ़ाई है तुम बच्चों के बुद्धि की खुराक। जो रोज़ पढ़ाई पढ़ते हैं अर्थात् इस खुराक को लेते हैं उनकी बुद्धि पारस बन जाती है। पारसनाथ बाप जो बुद्धिवानों की बुद्धि है वह तुम्हें आपसमान पारसबुद्धि बनाते हैं।

गीतः- तकदीर जगाकर आई हूँ..

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) बाप से सुख का वर्सा लेकर सुख का देवता बनना है। सबको सुख देना है। राजऋषि बनने के लिए सर्व विकारों का सन्यास करना है।

2) पढ़ाई ही सच्ची खुराक है। सद्गति के लिए सुनी-सुनाई बातों को छोड़ श्रीमत पर चलना है। एक बाप से ही सुनना है। मोहजीत बनना है।

वरदानः- अपने असली संस्कारों को इमर्ज कर सदा हर्षित रहने वाले ज्ञान स्वरूप भव

जो बच्चे ज्ञान का सिमरण कर उसका स्वरूप बनते हैं वह सदा हर्षित रहते हैं। सदा हर्षित रहना – यह ब्राह्मण जीवन का असली संस्कार है। दिव्य गुण अपनी चीज़ है, अवगुण माया की चीज़ है जो संगदोष से आ गये हैं। अब उसे पीठ दे दो और अपने आलमाइटी अथॉरिटी की पोजीशन पर रहो तो सदा हर्षित रहेंगे। कोई भी आसुरी वा व्यर्थ संस्कार सामने आने की हिम्मत भी नहीं रख सकेंगे।

स्लोगनः- सम्पूर्णता का लक्ष्य सामने रखो तो संकल्प में भी कोई आकर्षण आकर्षित नहीं कर सकती।

अव्यक्त इशारे

एकता और विश्वास की विशेषता द्वारा सफलता सम्पन्न बनो

एकता के लिए एक रूहानी तावीज़ सदा अपने पास रखना कि रिगार्ड देना ही रिगार्ड लेना है। यह रिगार्ड का रिकार्ड सफलता का अविनाशी रिकार्ड हो जायेगा। मुख पर एक ही सफलता का मन्त्र हो – ''पहले आप'' – यह महामन्त्र मन से पक्का रहे। यथार्थ रूप से पहले मैं को मिटाकर दूसरे को आगे बढ़ाना सो अपना बढ़ना समझते हुए इस महामन्त्र को आगे बढ़ाते सफलता को पाते रहो, यह मन्त्र और तावीज़ सदा साथ रहे तो प्रत्यक्षता का नगाड़ा बज जायेगा।

''सेवा करते डबल लाइट स्थिति द्वारा फरिश्तेपन की अवस्था में रहो, अशरीरी बनने का अभ्यास करो''

- आज बापदादा चारों ओर के बच्चों के तीन रूप देख रहे हैं – जो इस संगमयुग का लक्ष्य और लक्षण है, पहला स्वरूप ब्राह्मण, दूसरा फरिश्ता, तीसरा देवता। ब्राह्मण सो फरिश्ता, फरिश्ता सो देवता।
- फरिश्ता अर्थात् पुरानी दुनिया के सम्बन्ध, संस्कार, संकल्प से हल्का हो। यही लगन हो अब फरिश्ता बनना ही है। फरिश्ता अर्थात् इस देह, साकार देह से न्यारा, सदा लाइट के देहधारी। फरिश्ता अर्थात् इस कर्मेन्द्रियों के राजा।
- अभी यह तीव्र पुरुषार्थ का लक्ष्य और लक्षण सदा इमर्ज रखो। अभी समय अनुसार छोटी-छोटी विस्तार की बातें, स्वभाव-संस्कार की बातें अशरीरी अवस्था से दूर कर देती हैं। अभी इसमें परिवर्तन चाहिए।
- फरिश्तेपन की धुन अभी सेवा में विशेष एडीशन करो। कोई न कोई शान्ति का, खुशी का, सुख का, आत्मिक प्रेम का अनुभव कराओ।
- आज क्या पाठ पक्का किया? मैं कौन? फरिश्ता। किसी बातों से, किसी की विशेषताओं से वा अपनी विशेषता से, देह अभिमान से परे डबल लाइट फरिश्ता।

वरदान:- साकार और निराकार बाप के साथ द्वारा हर संकल्प में विजयी बनने वाले सदा सफलमूर्त भव

जैसे निराकार आत्मा और साकार शरीर दोनों के सम्बन्ध से हर कार्य कर सकते हो, ऐसे ही निराकार और साकार बाप दोनों को साथ वा सामने रखते हुए हर कर्म वा संकल्प करो तो सफलमूर्त बन जायेंगे क्योंकि जब बापदादा सम्मुख हैं तो जरूर उनसे वेरीफाय करा करके निश्चय और निर्भयता से करेंगे। इससे समय और संकल्प की बचत होगी। कुछ भी व्यर्थ नहीं जायेगा, हर कर्म स्वत: सफल होगा।

स्लोगन:- रुहानी स्नेह सम्पत्ति से भी अधिक मूल्यवान है इसलिए मास्टर स्नेह के सागर बनो।

अव्यक्त इशारे

एकता और विश्वास की विशेषता द्वारा सफलता सम्पन्न बनो

धर्म सत्ता वालों के सामने पवित्रता की शक्ति और राज्य सत्ता वालों के आगे एकता की शक्ति को सिद्ध करो। इन दोनों ही शक्तियों को सिद्ध करने से ईश्वरीय सत्ता का झण्डा बहुत सहज लहरा जायेगा। अभी इन दोनों की तरफ विशेष अटेन्शन चाहिए। जितना-जितना प्युरिटी और युनिटी की शक्ति से उन्हों के समीप सम्पर्क में आते रहेंगे उतना वह स्वयं ही अपना वर्णन करने लगेंगे।